भूगोल में अध्यापन की विधियाँ

भूगोल के ज्ञान तथा विषय-वस्तु के विस्तार के साथ उनकी शिक्षण-विधियाँ भी विकसित होती गयीं। भूगोल-शिक्षक का कर्तव्य है कि शिक्षण-विधियों के निश्चित करने में प्रत्यय-वस्तु की प्रकृति तथा बालकों की आयु, रुचि योग्यता का सदैव ध्यान रखे। आवश्यकता के अनुसार शिक्षण की विभिन्न विधियों का [redacted] उपयोग करें।

भूगोल अध्यापन की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं:-

1. निरीक्षणात्मक -
2. वर्णनात्मक -
3. भ्रमणात्मक -
4. प्रादेशिक -
5. तुलनात्मक -
6. डाल्टन -
7. प्रोजेक्ट -
8. वैज्ञानिक -
9. क्रियात्मक -

निरीक्षणात्मक विधि

यह विधि भूगोल-अध्यापन के सभी स्तरों पर उपयोगी है, किन्तु प्राथमिक कक्षाओं में विशेष रूप से उपयोगी है। इन कक्षाओं के बालक प्रारम्भिक अवस्था में अपने घरेलू, ग्रामीण तथा नागरिक वातावरण के सम्पर्क में आता है।

प्रत्यक्ष दर्शन, ज्ञान तथा अनुभव से बालक का भौगोलिक ज्ञान निरन्तर बढ़ता जायेगा और इसके आधार पर वह अन्य स्थानों की समान परिस्थितियों की कल्पना कर सकेगा। भूगोल-शिक्षक को चाहिए कि वह सावधानीपूर्वक बालक का उचित मार्ग-निर्देशन करें, जिससे बालक के मस्तिष्क में मिथ्या धारणाएँ न बनने पायें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

निरीक्षण-क्रिया में आकर्षण और मनोरंजन होना चाहिए। बड़े होने पर बालक का निरीक्षण अधिक सूक्ष्म, बुद्धिगम्य और तर्कयुक्त होकर अन्त में कार्य-कारण के सम्बन्धों को स्थापित करने की ओर उन्मुख होती है।

निरीक्षणात्मक प्रणाली में यह आवश्यक है कि जिस स्थान का निरीक्षण करना हो, उसको शिक्षक पहले जाकर भली प्रकार देख ले और बालकों को दिखाने योग्य सामग्री भली-भाँति क्रमानुसार ध्यान में रखे। समय-समय पर बच्चों का सुझाव भी स्वीकार करे और प्रारम्भ में बालकों को व्यक्तिगत निरीक्षण के लिए प्रोत्साहित करे, तत्पश्चात् प्रश्न और निर्देशन द्वारा उनका विवेचन करे।

निरीक्षण की भौगोलिक सामग्री का संग्रह अन्य प्रकार से भी हो सकता है, छुट्टी के समय प्राप्त वस्तुओं को स्कूल के संग्रहालय के लिए एकत्र करना चाहिए। अन्य संग्रहालय, चित्र, चलचित्र, मानचित्र प्रयोग आदि का निरीक्षण अधिक उपयोगी होता है।

कठिनाइयाँ—

निरीक्षण-विधि द्वारा भूगोल-अध्यापन में अधिक समय व्यय होता है तथा कक्षा के बाहर निरीक्षण के लिए जब छात्र आते हैं तो, अनुशासन सम्बन्धी कठिनाइयाँ शिक्षक के सामने आती हैं। दूर स्थित वस्तुओं के निरीक्षण में मार्ग-व्यय भी अधिक पड़ता है। इसलिए छोटी कक्षाओं के शिक्षक को आस-पड़ोस का ही निरीक्षण द्वारा अध्ययन करना चाहिए जहाँ बालक सुविधापूर्वक जा सकते हैं।

इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी निरीक्षणात्मक विधि का भूगोल-अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान है। तथा अध्यापन में इसका विस्तृत रूप में उपयोग हुआ है। बच्चों द्वारा इस प्रकार प्राप्त किया हुआ ज्ञान स्थायी तथा रुचिकर होता है, क्योंकि वे निरीक्षण द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान